मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

हिन्दी विभाग द्वारा प्रथम अंत:अनुशासनिक व्याख्यान का आयोजन

नई दिल्ली, 22 सितम्बर, 2025

हिन्दी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया द्वारा अंत:अनुशासनिक व्याख्यानमाला के तहत आज दिनांक 19.09.25 को प्रथम व्याख्यान एफटीके-सीआईटी सभागार में आयोजित किया गया, जिसमें प्रो. इराक़ रज़ा ज़ैदी ने "मन हिंदवी गोयम" विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया । कार्यक्रम का प्रारंभ डॉ. शाहनवाज़ फ़ैयाज़ द्वारा तिलावत-ए-कुरान और जामिया तराना के साथ किया गया । तत्पश्चात अतिथियों का स्वागत पादप और स्मृति चिन्ह द्वारा किया गया ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. मज़हर आसिफ़ ने की तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. इक्तिदार मोहम्मद खान (संकाय अध्यक्ष, मानविकी और भाषा संकाय) उपस्थित रहे ।

स्वागत वक्तव्य देते हुए विभाग के अध्यक्ष प्रो. नीरज कुमार ने कहा कि वर्तमान साहित्य में आई जटिल संकल्पनाओं को समझने में विद्यार्थियों को हो रही परेशानियों के मद्देनजर ऐसे कार्यक्रम जरूरी है । इसी क्रम में हमारे विभाग ने अंत: अनुशासनिक व्याख्यान माला की योजना बनाई और खुसरो के साहित्यिक- सांस्कृतिक महत्व के कारण पहला व्याख्यान खुसरो पर केंद्रित रखा गया ।

अपने व्याख्यान में प्रो. इराक़ रज़ा ज़ैदी ने अमीर खुसरो के जीवन और उनके साहित्यिक अवदान के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण करते हुए कहा कि खुसरो विलक्षण प्रतिभा के धनी थे और उनकी शख्सियत के विविध पहलू हैं । जटिलता के कारण खुसरो को समझना आसान नहीं है । उन्होंने जितना सरमाया छोड़ा, उतना किसी भी शायर ने नहीं । खुसरो ने हर शैली में लेखन किया । उन्होंने खुसरो के व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए कहा कि उन्होंने हुकूमत के चार दौर देखे और उस दौर में सात बादशाह देखे जबकि उस दौर में अलग-अलग शासकों का प्रिय बनना संभव नहीं था लेकिन खुसरो ने उसे निभाया । उन्होंने कहा कि खुसरो ने इस बात का जिक्र किया कि 'मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूँ और मैं हिंदवी में पानी की तरह बोलता हूँ" । प्रो. ज़ैदी ने खालिकबारी को प्रामाणिक रचना बताते हुए उस पर हो रहे विवाद पर रोशनी डाली ।

अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कुलपति प्रो. मज़हर आसिफ़ ने अमीर खुसरो को फ़ारसी का सबसे बड़ा कवि बताया । उन्होंने कहा कि खुसरो ने विविध विधाओं में लेखन किया । उन्होंने गद्य में एक ऐसी रचना की जिसे आज के फारसी के रचनाकार भी नहीं समझ पाते । उन्होंने कहा कि अमीर खुसरो पहले कवि हैं, जिन्हें भारतीय होने का गर्व प्राप्त हैं और खुसरो के कई पद सिर्फ भारतीय समझ सकते हैं । सावन, बरसात, सोमनाथ आदि प्रसंगों को समझाते हुए कुलपति महोदय ने कहा कि विशिष्ट सांस्कृतिक संदर्भों के कारण ईरान के विद्वान उसे नहीं समझ सकते हैं ।

भाषा एवं मानविकी संकाय के डीन प्रो. इक्तिदार मोहम्मद खान ने कहा कि हिन्दी विभाग की इस व्याख्यानमाला का पहला व्याख्यान प्रासंगिक विषय पर है । उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अंत:अनुशासनात्मक आयोजन साझी संस्कृति को बढ़ावा देने का एक कदम है ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए व्याख्यान माला के संयोजक प्रो. रहमान मुसव्विर ने कहा कि खुसरो से इस व्याख्यानमाला की शुरुआत इसलिए की गई क्योंकि खुसरो हिन्दी और उर्दू की कविता के प्रस्थान बिन्दु हैं । उन्होंने कहा कि यह व्याख्यान अकादमिक महत्त्व के कारण लंबे समय तक याद

रहेगा । इस कार्यक्रम में जामिया के विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, शिक्षक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रो .साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

हिंदी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली -25
प्रो. इराक़ रज़ा ज़ैदी
वक्ता
JAMIA
प्रो. इराक़ रज़ा ज़ैदी
प्रो. मज़हर आसिफ़
प्रो. इक़्तिदार मोहम्मद खान

हिंदी विभाग
अंत:अनुशासनिक
प्रो. मज़हर आसिफ
प्रो. नीरज कुमार
प्रो. रहमान मुसव्विर

جامعہ ملیہ اسلامیہ

हिंदी विभाग जामिया मिल्लिया इस्लामिया नई दिल्ली 25
अंत:अनुशासनिक व्याख्यान माला
प्रो. नीरज कुमार
प्रो. रहमान मुसव्विर

جامعہ ملیہ اسلامیہ

SLAM

اردو